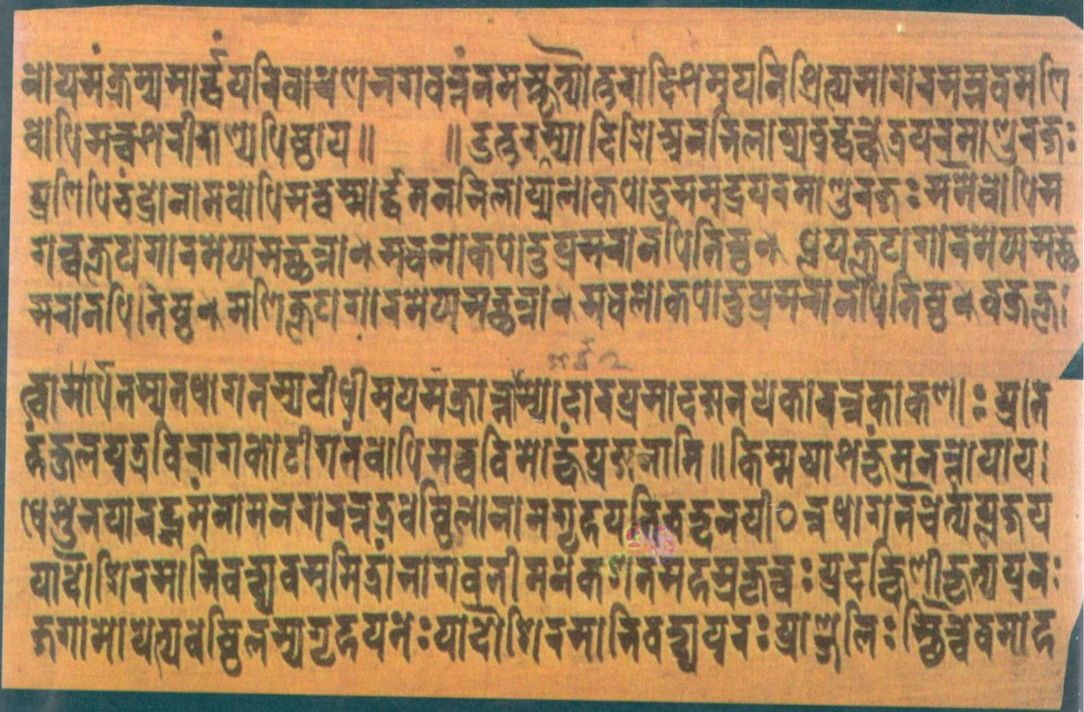
SIGNIFICANT FACETS
of
MODERN SANSKRIT LITERATURE
(Translated Works)



Edited by :

RABINDRA KUMAR PANDA
SHWETA A. JEJURKAR

SIGNIFICANT FACETS OF MODERN SANSKRIT LITERATURE

(*Translated Works*)

Edited by :

RABINDRA KUMAR PANDA

SHWETA A. JEJURKAR

BKP

BHARATIYA KALA PRAKASHAN

DELHI (INDIA)

First Edition : 2011

ISBN : 978-81-8090-268-0

Published by : **C.P. GAUTAM**
for BHARATIYA KALA PRAKASHAN
3421-A, IInd Floor, Narang Colony,
Tri Nagar, Delhi-110035.
Phone : (O) 27393083, 32967505
E-mail : bkp3421@yahoo.co.in

Laser Typesetting by : Twinkle Graphics, Delhi-110088.

Printed at : G.S. Offset, Delhi

CONTENTS

Preface (*ix*)

Contributor List (*xiii*)

1. *Urmi Shah*
   Translation and Literature : A Self-Experience 1
2. *Arun Ranjan Mishra*
   Philosophy of Translation and Lāvaṇyavatī 7
3. *Rabindra Kumar Panda*
   Some Noteworthy Sanskrit Translated Works of Twentieth Century 25
4. *Sunanda Y. Shastri*
   Translation of 101 Zen Stories–An Experience 34
5. *S. Ranganath*
   Sanskrit Translations of the Kannaḍa Works 42
6. *Suma Desai*
   Sanskrit Version of Sārthaḥ 54
7. *Daxa Purohit*
   Sanskrit Translation of Dharmaśrīḥ 62
8. *Shweta Jejurkar*
   Sanskrit Translations of Some Marathi Literary Works (with special reference to "Dvāram Jñāninnapāvṛṇu") 68
9. *Nirmala R. Kulkarni*
   Sanskrit Translations of Marathi Musical Dramas 82

10. *Kanchan Mande*
Sanskrit Translation of Jñāneśwarī 95

11. *Mukund L. Wadekar*
Śrīmanaḥ ślokāḥ-by Pt. Shriram Bhikaji Velankar 105

12. *Usha M. Brahmachari*
Sāgaravihangamah 113

13. *Kartik Pandya*
An Introduction to *Patthuppāttu* in Sanskrit 118

14. *Sharmila Bagchi*
Śrī Rāmakṛṣṇagīta – The Messages of Śrī Rāmakṛṣṇa in Sanskrit 126

15. *Nehal Pandya*
Mayūradūtam – A Dūtakāvya from Malayalam to Sanskrit 134

16. *Upadhyay Manoj A.*
Dattadvipañchāśikā by Lakshmishankar Shukla – A Study 142

17. *V.D. Shete*
Emerging discourse in Sanskrit Version of an Approach to Indian Textual Criticism 153

18. *Kusum Merh*
From Daffodils to Swarṇa Puśpāṇi – An Assessment of Āngala Romāñcam 160

19. *Banamali Biswal*
गालिबकाव्यम्–A Unique Translation of दिवान गालिब into Sanskrit आर्या 180

20. *बलदेवानन्दसागर:*
संचार–माध्यमानां सन्दर्भे आधुनिक संस्कृतस्य अनुवाद–प्रक्रिया 197

21. *भागीरथिनन्दः*
संस्कृतानुवादेऽनुभूयमानाः समस्याः तन्निराकरणोपायाश्च 203

22. *नारायण दाशः*
अनूदित–संस्कृत–साहित्ये वङ्गीयानामवदानम् 207

23. *रुपाली कापरे*
मराठीगीतानां सस्कृताविष्करणम् 221

24. *ऋषभ भारद्वाज*
अनूदित काव्यस्रष्टारे द्विवेदिवर्याः 238

25. *मिलिन्द एस. जोषी*
श्रीसंतज्ञानेश्वरविरचित चाङदेवपासष्टी (चाङ्गदेवपञ्चषष्टिः) 255

26. *ओम प्रकाश यादव*
वैश्वीकरण में अनुवाद की प्रक्रिया 263

27. *जया दवे*
संस्कृत साहित्य में अनुवाद काव्य परम्परा
(एक अनुशीलन पं. श्रीराम दवे के सन्दर्भ में) 271

28. *मायाप्रकाश पाण्डेय*
तुलनात्मक साहित्य और निर्मला 279

29. *दीपेन्द्र जाडेजा*
बिहारी–सतसई के संस्कृत अनुवाद–एक अनुशीलन 299

30. *नीना भावनगरी*
जयशंकरप्रसादकृत ध्रुवस्वामिनी नाटक का संस्कृत
अनुवाद : कितना अधिकृत? एक संमिश्रित प्रतिक्रिया 311

31. *कल्पना टी. हरियाणी*
रामचरितमानस का संस्कृत पद्यानुवाद 319

32. *आशा गुर्जर*
डॉ पलसुलेजी का अनुवादक्षेत्र में योगदान 329

33. *श्वेता प्रजापति*
'बन्दिनः स्वदेशचिन्ता' ओड़िया काव्य का संस्कृतानुवाद–
एक समीक्षा 333

34. *मक़सूद अहमद*
देवालयस्य दीपः–परिचय तथा समीक्षा 342

35. *प्रज्ञा जोगेश जोशी*
अश्आर–रसधारः–एक समीक्षा 389

36. *नयना कल्पेश नायक*
सेतुबन्धः (गुर्जरकाव्यानुवादः) में अनुवादक जशवंती दवे
की प्रतिभा 411

37. *राजेश व्यास*
श्रीगुरुजीः (कश्चन जीवनयज्ञः) एक अवलोकन 425

38. *पंड्या भारवि एन.*
घनश्याम त्रिवेदी कृत "नूतन भक्ति-सुधा"–एक रसास्वाद 432

39. *हेतल पंड्या*
शास्त्रीय ग्रन्थ का अनुवाद कोष बनाम संकल्पना 442

40. *जयंत उमरेठिया*
गुजराती लोकसाहित्य का नया प्रस्थानः संस्कृत साहित्य
क्षेत्र में 449

41. *सुदेश आहूजा*
श्रीरामदवे अनूदित 'निर्मला' भाव व
भाषा की कसौटी पर 454

42. *Saswati Sen*
Gitanjali of Rabindranath : From Bengali to
Sanskrit 464

43. *प्रो. शिवकुमार मिश्र*
अनुवाद : भारत और यूरोप की दृष्टि में 470

33

'बन्दिनः स्वदेशचिन्ता' ओड़िया काव्य का संस्कृतानुवाद : एक समीक्षा

श्वेता प्रजापति

'बन्दिनः स्वदेशचिन्ता' मूलतः पंडित गोपबंधु दास द्वारा विरचित 'बन्दिर स्वदेशचिंता' ओड़िया काव्य का संस्कृतानुवाद है। ओड़िया साहित्य के स्वनामधन्य कवि उत्कलमणि पं. गोपबन्धु दास उच्चकोटि के साहित्यकार थे। मनुष्य के मार्मिक भावों के चित्रण में नैपुण्य के कारण ओरिस्सा प्रान्त में वे दर्दीकवि (An Emotional poet) के नाम से विख्यात हुए।

पं. गोपबंधु दास (1876-1928 A.D.) राष्ट्रनेता, स्वातंत्र्यसंग्रामी, सामाजिक कार्यकर और दीर्घद्रष्टिस्प्पन्न कुशल शिक्षाविद् थे। २६वीं शताब्दी के अंत भाग और २०वीं शताब्दी के प्रारंभ काल में ब्रिटिश शासन में समग्र उत्कल अखंड राष्ट्र को ध्वंस किया गया था और तत्कालीन ओड़िया प्रजाजनों की स्थिति दुरूह हो गई थी। आज के ओड़िस्सा राज्य का निर्माण करने में और दरिद्र और पिछड़े हुए ओरिया जनसमाज को उन्नति की ओर ले जाने में पं. गोपबंधु ने अनमोल योगदान दिया था। विद्यार्थीकाल में ही उनकी अतिव्यस्तता के लिए साहित्यसर्जन के लिए समय न मिल पाया। लेकिन दो साल के कारावास के दौरान उनके अंदर सो रही कविप्रतिभा पुनः जाग्रत हुई। सन् १९२२ से १९२४ तक बिहार के हजारीबाग जेल में दो साल तक वे कैदी रहे। इस कारावास के दौरान उन्होंने 'बन्दिर आत्मकथा'-(The Autobiography of a Prisoner), काराकविता- (Poems written in Prison) और धर्मपद (A ballad on the legendary boy-architect of the Sun Temple at Konarka) जैसे उत्कृष्ट काव्यों की रचना की।

नचिकेत उपाख्यान और गो-माहात्म्य की रचना भी उन्होंने कारावास में रहकर ही की थी। पं. गोपबंधु के काव्यों ने लोकसाहित्य की भाँति ओरिस्सा के जन जन के हृदय में स्थान बनाया।

काराकविता (Poems written in Prison) विभिन्न काव्यों का संग्रह है। उसमें से 'बन्दिर स्वदेशचिंता' (The thoughts of a prisoner of his Homeland), एक काव्य है जिसका संस्कृतानुवाद पं. प्रबोध मिश्रने किया। इस काव्य में कारावास में बंदि कवि अपने देश की चिंता में अत्यंत दु:खी थे तब ओरिस्सा की ओर से दक्षिण दिक् से हजारीबाग जेल की ओर आ रहे पवन को आवाहन करते हैं। कालिदास के मेघदूत की शैली का अनुसरण करके मरुत को दूत बनाकर कवि ने अपने देश ओरिस्सा भेजा है। यहीं एक स्वातंत्र्यसंग्रामी देशभक्त के हृदयविदारक कारुण्य की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति हुई है। ओरिस्सा के विभिन्न स्थल-श्रीक्षेत्र, शाखिगोपाल (कवि का आश्रम), ऋषिकूल्या नदी, चिलिका सरोवर, लिङ्गराजमंदिर, महानदी, खण्डगिरि, बारबाटि का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त इस काव्य में कवि ने ओरिस्सा के दरिद्र किसानों, वनवासियों, पीड़ितों की दयनीय स्थिति का हृदयद्रावक चित्रण किया है। इस काव्य में कवि का दर्दीकवि होना सार्थक हुआ है।

अनूदित कृति 'बन्दिनः स्वदेशचिन्ता'

मूल कृति 'बन्दिर स्वदेशचिन्ता' (a part of *Kārākavitā*) का संस्कृत अनुवाद पं. प्रबोधकुमार मिश्र ने किया और स्वयं ही १९७९ में कटक से प्रकाशित किया। ७१ श्लोकसंबद्ध इस काव्य के संस्कृत अनुवाद के साथ पाठकों की सुविधा हेतु मूल ओड़िया काव्य भी ओड़िया और देवनागरी लिपि में दिया गया है। काव्य के अंत में सुभाषितों की सूची दी गई है। संस्कृत पद्यों में मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका, उपजाति, इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा जैसे छंदों का विनिवेश किया गया है। मूल ओड़िया कृति को देवभाषा संस्कृत में अनूदित करके पं. प्रबोधकुमार मिश्र ने इस काव्य के पाठकों में वृद्धि की है। एक उत्कृष्ट कवि की उत्कृष्ट रचना का संस्कृत भाषा में अनुवाद का यह कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। पं. मिश्र के इस अनुवादकार्य की समीक्षा करने का प्रयास इस शोधलेख में किया जा रहा है।

श्लोक 1

बाहारे बहई केते सुशीतल
मधुर मलय मन्द मरुत॥

नवमल्ली कढ़ि (कलि) मुडुकि हसइ।
भ्रमर दोलाए प्रेमे ता वृन्त॥

कबाट फाङ्करे चाहिले बाङ्करे।
थरे थरे आसे चोरा पबन॥
से कि गुप्तचर बाहार खबर
देइ लुचि चालियाए बहन॥

संस्कृत अनुवाद

मन्दश्चायं मधुरमलयः शीतलो वाति सारः।
मल्लीबाला स्मितमुकुलिता दोलिता भृङ्रङ्गैः॥
लभ्यो वातायनपरिसरे माधवो वक्रभङ्ग्या।
किम्वा गुप्तश्चर इव बहिर्वार्त्तिकां याति दत्वा॥

श्लोक 1 : यहाँ 'कबाट फाङ्करे' शब्द का अनुवाद 'वातायनपरिसरे' किया गया है। यह उचित नहीं है। कबाट फाङ्करे का अर्थ होता है द्वार की अत्यंत छोटी सी दरार से किन्तु परिसर शब्द का प्रयोग चार तरफ की जगह को सूचित करता है। इससे छोटी से छोटी जगह से पवन का प्रवेश होना यह भाव संपूर्णरूप में परिवर्तित हो जाता है। 'लुचि' याने छूपकर और बहन माने शीघ्र-यह दोनों शब्दों का अनुवाद में त्याग किया गया है। बाहारे बहई केते पवन-याने बाहर कितना पवन बहता है, इस के लिये 'अयं' याने यह पवन ऐसा अनुवाद हुआ है।

श्लोक 2 : में जलते हुए प्राण के लिए 'तापितप्राण' शब्द का प्रयोग होने पर भाव का अवबोध नहीं हो रहा है। 'पुनाङ्ग' और 'नाचे पलके' शब्द का निवेश अनुवाद में नहीं हुआ है।

श्लोक 3 : का अनुवाद उचित मालूम पड़ता है।

श्लोक 4 : यहाँ 'ग्रामसिमन्तीनी' शब्द के लिए ग्रामीणबाला शब्द का प्रयोग किया है, सर्वथा अनुचित है, क्योंकि सिमन्तीनी का अर्थ-सौभाग्यवती होता है। 'पानी भरती है' के लिए 'नयेत्' (लेना उचित) ठीक नहीं है, यहाँ नयन्ति शब्द अपेक्षित है। इसी तरह 'संप्रसेत्' के स्थान पर प्रसरति योग्य होगा। 'चहलाइ पाणि' का अर्थ है कलश डालने से अपनेआप पानी में विभाग होना इसके लिए वारि-विभङ्ग-कारितैः शब्द बनाया गया जो कि भावविहिन प्रतीत होता है।

श्लोक 5 : यहाँ 'पद पकाई' शब्द विशेष अर्थ को द्योतित करता है। ओड़िसा के कविसम्राट उपेन्द्र भंज के पदों का अंत लयात्मक होता है

और उन पदों का पुनरावर्तन करने की क्रिया को 'पद पकाई' कहा गया है। अनुवादक ने इसके लिए पद-पात-तत्पराः शब्द का प्रयोग किया है।

पादपूरणार्थ 'वा' पद यहाँ मिलता है किन्तु विकल्प का अर्थ यहाँ योग्य नहीं है। हृष्टास्तु-प्रसन्न होकर-यह शब्द मूल कृति में ही नहीं है। 'फेरन्ति वेपारी' शब्द के लिए 'यान्ति गृहं' शब्द का प्रयोग हुआ है। गृह शब्द अधिक है और इसमें थके हुए लौट रहे हैं ऐसा अर्थ प्राप्त नहीं हो रहा है।

श्लोक 6 : यागेश्वरी पीठ्ठतले-यहाँ तले शब्द योग्य नहीं है। दीपदेई-प्रदीपकं दत्त्वा-यहाँ दीया जलाके ऐसा अर्थ नहीं बन पाता है। अंतिम दो पंक्तियों का अनुवाद मूल से संपूर्ण भिन्न प्रतीत होता है। गोटाए शब्द का अर्थ है संग्रह करना, इस के लिए संस्कृत में 'नयेत् द्रुतम्' शब्द प्रयोग हुआ है। यह भी ठीक नहीं है।

श्लोक 7

याउँली कान्धरे केबे वा बन्धरे
भउणी आगरे चालईं भाड़,
शाशूघरे निए सन्ध्या देखि कहे
चाण्डे गोड़ काढ़ि चालिबा पाई।।7।।

संस्कृत अनुवाद

बन्धे कदा वा भगिनी-पुरोऽटति
भ्राता तु भारं विनिधाय पृष्ठतः।
सन्ध्या-समाच्छादित-कालमीक्ष्य च
शीघ्रं प्रयातुं कथयन् मुहुः गृहम्।।7।।

यहाँ 'कान्धरे' के लिए 'पृष्ठतः' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'शाशूघर' के लिए 'गृहम्' शब्द के प्रयोग से भाई अपनी बहन को उसके ससुराल छोड़ने जा रहा है यह बात स्पष्ट नहीं होती है। इससे भावहानि भी होती है।

श्लोक 8 :

नब चउबनी काखे पिला घेनि
चालि न पारइ जघनभारे।
ता चाहिं चपल युबा सङ्गिदल
परिहासे एक आनकु ठारे।।8।।

संस्कृत अनुवाद :

सबालकक्षा नवयौवनोन्नता
झटित्यहो नैव च याति चञ्चला।
युवव्रजः वीक्ष्य सलील-चातुरीं
परस्परं हीङ्गित-दान-तत्पराः॥8॥

यहाँ 'जघनभार' शब्द का संस्कृतानुवाद कवि ने किया नहीं है और 'झटित्यहो नैव च याति' में झटिति शब्द अधिक प्रयोग किया है। कमर में बच्चे को लेकर-इसके लिए 'सबालकक्षा' ऐसा समास बना लिया, यहाँ केवल Mechanical process दिखाई पड़ रहा है और भावनिवेश कम हुआ है। परिहास शब्द का भी त्याग किया गया है।

श्लोक 9 और 11 का अनुवाद अच्छा हुआ है। किन्तु श्लोक 10 के अनुवाद में कुछ शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ दिखाई देता है।

श्लोक 10

घर कथा क्रमे पडियाए मने
अतिथि आदर देब-अर्च्चना।
कारागारकक्षे किंपाई ए बक्षे
आणिबि आउ से वृथा भावना॥

संस्कृत अनुवाद

स्मरामि वासान्त-विमूर्त्त-यामिनी
सुरातिथेरर्च्चन-गौरवोज्वलाम्।
कथं च कारा-भवन-प्रवासिनो
वृथा तु भावो मनसि प्रजायते॥

यहाँ कवि कहता है कि धीरे-धीरे घर की सब बातें मन में याद आती है-अतिथियों का आदर, देवार्चना इत्यादि। लेकिन कारगार के इस कक्ष में अंतर में क्यूं इस वृथा भावना को लाऊँ?

यहाँ घर की सब बाते धीरे धीरे स्मरण होना-इसके लिए 'वासान्त-विमूर्त्त यामिनी' शब्द ज्यादा ही क्लिष्ट और भावशून्य लगता है। 'किंपाईं आणिबि' का अर्थ है क्यूं लाऊँ-लेकिन इसके लिए 'कथं प्रजायते'-क्यूं होता है ऐसा परिवर्तन मिलता है। इससे कवि का विवक्षित अर्थ द्योतित नहीं होता है।

श्लोक 12

मोर प्रियस्थली केते निउछालि
करिथिबे तब आसिबा बाटे।
देइथिबे परा केते कि सन्देश
शुणिबाकु मन अछि उच्चाटे।

संस्कृत अनुवाद

प्रियस्थली मे नितरां व्यथाकुला
तवायनं सन्तत-शोक-विह्वला।
मदर्थ-सन्देश-रस-प्रदायिनी
भवेदहो मन्मन एव लोलुपम्।।

यहाँ कवि पवन को कहते हैं कि मेरे प्रिय स्थल ने तुम्हारे आने के रास्ते पर तुम्हें कितनी प्रार्थना की होगी, तुम्हें कितने संदेश दिये होंगे-यह सुनने के लिए मेरा मन अधीर है।

यहाँ 'निउछालि' याने प्रार्थना लेकिन उसके लिए सन्तप्त-शोक-विह्वला शब्द का प्रयोग पूर्णतः भिन्न अर्थ का द्योतक है। देइथिबे-दिया होगा' इस अर्थ के लिए संस्कृत में कोई क्रियापद का प्रयोग न करके सन्देश-रस-प्रदायिनी जैसा शब्दप्रयोग समस्त पद्य को नीरस बना देता है। उच्चाट शब्द का अर्थ होता है अत्यंत अधीर हो जाना किन्तु उसके लिए लोलुप शब्द का प्रयोग सर्वथा अस्वीकृत है।

श्लोक 14 : में मूल पद्य से अनूदित पद्य में कुछ अधिक ही विस्तार किया हुआ मालूम होता है।

करिथिब भेट मञ्जूषा-मुकुट
महेन्द्र शइल सुबास फुल।
तब समागमे नाचिथिबे प्रेमे
दोहलाइ तरु-भुज-सङ्कुल।।

संस्कृत अनुवाद :

'मंजूषा'याः मुकुट-सुषमं द्राङ्महेन्द्राद्रिपुष्पं
गन्धोद्धूतं तव च नयनातिथ्यमाप्तं स्वरूपात्।
प्रेम्णा ते वाऽयन-पथि तरुः नर्त्तनानन्दरक्तः
शाखा पाणि-प्रसरण-विधौ स्वागतिं ज्ञापयन् वा।।

यहाँ कवि पवन को कहता है कि रास्ते में आते आते तुम मञ्जूषा नामक पर्वत के शिखर को मिले होंगे और महेन्द्र प्रर्वत पर पल्लवित होने वाले पुष्पों की सुवास भी ली होगी, तुम्हारे समागम से वृक्ष की शाखा प्रेम से दोलित हुई होगी।

यहाँ देखा जाता है कि मूल कृति में प्रगटित कवि की भावना बहुत ही कम शब्दों द्वारा हुई है किन्तु अनुवाद में अनावश्यक विस्तार हुआ है। करिथिब-किया होगा, नाचिथिबे-नाचे होगे ऐसे प्रयोगों का अनुवाद योग्य न होने से भाव का नितान्त अभाव दृष्टिगोचर होता है।

श्लोक 15 : में कवि कहता है–हे पवन जब तुम ऋषिकूल्या नदी का स्पर्श करके आते होंगे-यहाँ 'परशि'-स्पर्श करके शुणिथिब-सुना होगा-के लिए-शृणोसि, थिब अनाई-देखा होगा-के लिए-लसति शब्द के प्रयोग योग्य नहीं है।

इसी तरह श्लोक-16 में चुम्बिथिब-चुम्बसि, देखुथिब-वीक्ष्यते-यह प्रयोग अरुचिकर लगते है।श्लोक-16, 17 में चिलिका सरोवर का वर्णन प्राप्त होता है।

श्लोक-18, 19, 20, 21 में श्रीक्षेत्र-जगन्नाथपुरी का वर्णन कवि ने किया है।

श्लोक 19

श्रीपदतुलसी शिररे परशि
लभिथिब महामोद अन्तरे
नीलचक्रचूले प्रेम-भक्ति-भोले
देइथिब नेत उडाइ थरे।
पुण्य गन्धवह! कर अनुग्रह
कह प्रिय पुरी सुसमाचार
कन्दरनिवासी प्रभु ब्रह्मराशि
करुछन्ति एबे केउँ बिचार॥

संस्कृत अनुवाद

मूर्द्धन्येवं परम-तुलसी-स्पर्शतः मोदचित्तः
प्रेम्णा भक्त्या स्पृशसि च सकृत् केतनं नीलचक्रे।
पुण्यप्राण! प्रवद वहते! श्रीपुरी-वार्त्तिकां मे
श्रीक्षेत्रेशः मनसि किमहो भावयेद् भावधायी॥

यहाँ पर पवनने नीलचक्र के मंदिर पर ध्वज को उड़ाया होगा इस के लिए देइथिब नेत उडाइ-स्पृशसि च सकृत केतनं, 'कन्दरनिवासी' शब्द का अनुवाद हुआ ही नहीं।

श्लोक 22 से 25 तक शाखिगोपाल में स्थित गोपीनाथ आश्रम का वर्णन कवि ने किया है।श्लोक 26 से 30 तक लिङ्गराज मंदिर, 31 से 40 तक खण्डगिरि, 42-43 महानदी, 44 से 45 तक बारबाटी का वर्णन मिलता है। इसके बाद कवि ने राजा और प्रजा के संबंध के बारे में, प्रजा के दुःख और पीड़ा का वर्णन किया है। और अंत में कवि कहते हैं कि दक्षिण दिशा से विभिन्न पवित्र धामों को स्पर्श करते हुए आया हुआ पवन आज मुझे भी पवित्र कर रहा है और उसके स्पर्श से कारावास में मेरा हृदय भी प्रमोदित हुआ है।

काव्य के अंत में पाँच सुभाषित दिये गये हैं। वास्तव में 'काराकविता' के ये कुछ बहुत ही विख्यात पद्य हैं, जो स्वतंत्रतासंग्राम के समय में ओरिस्सा के जन जन के हृदय को हिला देने वाले थे। आज भी जब इसे गाया जाता है तब देशप्रेम की उत्कृष्ट भावना और रोमांच जाग उठते हैं-

मिटु मोर देह ए देश माटिरे
देशवासी चालि याअन्तु पिठिरे।
देशर स्वराज्यपथे येते गाड़
पूरु तहिं पड़ि मोर मांस हाड़॥

स्वदेशभूमौ ननु लीयतां तनुः
स्वदेशलोकाः मम यान्तु पृष्ठतः।
स्वराज्यमार्गे यदि गर्त्तमस्ति वा
मदस्थिमांसे परिपूर्ण्णमस्तु तत्॥

उपसंहार

विश्वसनीय अनुवाद करना एक दुरूह कार्य है और जब कोई प्रान्तीय भाषा से संस्कृत में अनुवाद किया जाता है तब यह कार्य और भी कठिन हो जाता है। पं. प्रबोध मिश्र ने यह कार्य करके ओड़िया भाषा की एक उत्कृष्ट साहित्यकृति को विश्वफलक पर रख दिया। ओड़िया भाषा जैसी भाव-प्रवाहितता लाने का संपूर्ण प्रयास अनुवाद में किया गया है किन्तु छन्द के परिवर्तन से अनुवादक ने मूल पद्य में से कुछ पदों का त्याग किया है और कुछ अधिक पदों का निवेश भी किया है। मूल पद्य को संस्कृत भाषा

के छन्दों में ढालने के यांत्रिक प्रयास से मूल कृति के भावों का अनूदित कृति में संक्रमण हो नहीं पाया है। फलतः मूल कृति ओड़िया भाषा में भावप्रवहण करती है किन्तु अनूदित कृति में कुछ पद्यों में भावशून्यता दिखाई पड़ती है। अनूदित कृति में मूल कृति की वैचारिक उत्कृष्टता और अभिव्यक्ति के सौंदर्य को संभालना अनिवार्य रूप से आवश्यक है। मूल कृति में रहे दोषों को दूर करने का या स्पष्टता हेतु अधिक अभिव्यक्ति का प्रयास करना भी उचित नहीं है।

ओड़िया भाषा अन्य प्रान्तीय भाषा की तरह अत्यंत सरल, मधुर और अभिव्यक्तिक्षम है। प्रस्तुत काव्य में कवि श्री गोपबंधु की वाणी अत्यंत भावमयी और लालित्यपूर्ण है। पं. प्रबोध मिश्र द्वारा किया गया यह संस्कृतानुवाद एक सफल प्रयास अवश्य है किन्तु मूल कृति के सभी मार्मिक भावों का आस्वाद अनूदित कृति से मिलना असंभव सा महसूस होता है। मेरा अपना यह मानना है कि यह भाषाओं की अपनी अपनी मर्यादा भी है। फिर भी अंत में यह कहते हुए अत्यंत प्रसन्नता होती है कि राष्ट्रभक्ति से पूर्ण इस ओड़िया काव्य को पं. प्रबोध मिश्र ने संस्कृत में अनूदित करके राष्ट्रीय स्तर पर रखा और आज यह काव्य कोई भाषाविशेष या प्रांतविशष का नहीं होकर समग्र राष्ट्र का बन गया है।